ایاتها ٨ ۝ ١٠٢ سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ ١٦ ۝ رکوعها ١

सूरए तकासुर मक्किय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ﴿۳﴾ ثُمَّ

तुम्हें ग़ाफ़िल रखा[2] माल की ज़ियादा त़लबी ने[3] यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा[4] हां हां जल्द जान जाओगे[5] फिर

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ﴿۴﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ؕ﴿۵﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۙ﴿۶﴾

हां हां जल्द जान जाओगे[6] हां हां अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की मह़ब्बत न रखते[7] बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे[8]

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ﴿۷﴾ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿۸﴾ ع ١ ٨ ٢٧

फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी[9]

ایاتها ٣ ۝ ١٠٣ سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ ١٣ ۝ رکوعها ١

सूरए अ़स्र मक्किय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

وَالْعَصْرِ ۙ﴿۱﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ﴿۲﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

उस ज़मानए मह़बूब की क़सम[2] बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है[3] मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम

1 : "सूरए तकासुर" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, अठ्ठाईस कलिमे, एक सो बीस ह़र्फ़ हैं। 2 : अल्लाह तआ़ला की त़ाअ़ात से 3 : इस से मा'लूम हुवा कि कस्रते माल की ह़िर्स और इस पर मुफ़ाख़रत मज़्मूम है और इस में मुब्तला हो कर आदमी सआ़दते उख़्रविय्या से मह़रूम रह जाता है। 4 : या'नी मौत के वक़्त तक ह़िर्स तुम्हारे दामन गीरे ख़ात़िर रही। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुर्दे के साथ तीन होते हैं दो लौट आते हैं एक उस के साथ रह जाता है। एक माल एक उस के अहलो अक़ारिब एक उस का अ़मल, अ़मल साथ रह जाता है बाक़ी दोनों वापस हो जाते हैं। (بخاری) 5 : नज़्अ़ के वक़्त अपने इस ह़ाल के नतीजए बद को 6 : क़ब्रों में। 7 : और ह़िर्से माल में मुब्तला हो कर आख़िरत से ग़ाफ़िल न होते। 8 : मरने के बा'द 9 : जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई थीं, सिह़्ह़तो फ़राग़ व अम्नो ऐ़श व माल वग़ैरा जिन से दुन्या में लज़्ज़तें उठाते थे। पूछा जाएगा : येह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं, इन का क्या शुक्र अदा किया ? और तर्के शुक्र पर अ़ज़ाब किया जाएगा। 1 : "सूरए वल अ़स्र" जुम्हूर के नज़्दीक मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, चौदह कलिमे, अड़सठ ह़र्फ़ हैं। 2 : "अ़स्र" ज़माने को कहते हैं और ज़माना चूंकि अ़जाइबात पर मुश्तमिल है, इस में अह़वाल का तग़य्युरो तबद्दुल नाज़िर के लिये इ़ब्रत का सबब होता है और येह चीज़ें ख़ालिक़े ह़कीम की क़ुदरतो ह़िक्मत और उस की वह़दानिय्यत पर दलालत करती हैं। इस लिये हो सकता है कि ज़माने की क़सम मुराद हो और "अ़स्र" उस वक़्त को भी कहते हैं जो ग़ुरूब से क़ब्ल होता है। हो सकता है कि ख़ासिर के ह़क़ में इस वक़्त की क़सम याद फ़रमाई जाए जैसा कि राबेह़ के ह़क़ में "ज़ुह़ा" या'नी "वक़्ते चाश्त की क़सम" ज़िक्र फ़रमाई गई और एक क़ौल येह भी है कि अ़स्र से नमाज़े अ़स्र मुराद हो सकती है जो दिन की इ़बादतों

ع ۲۸

الصّٰلِحٰتِ وَ تَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۵ وَ تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿۳﴾ ع

किये और एक दूसरे को हक़ की ताकीद की[4] और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की[5]

اٰیاتھا ۹ ﴿۱۰۴ سُوْرَۃُ الْھُمَزَۃِ مَکِّیَّۃٌ ۳۲﴾ رکوعھا ۱

सूरए हुमज़ह मक्किय्या है, इस में नव आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

**अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَیْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیْ جَمَعَ مَالًا وَّ عَدَّدَهٗ ۙ﴿۲﴾ یَحْسَبُ

ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे[2] जिस ने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा क्या येह समझता है

اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۚ﴿۳﴾ كَلَّا لَیُنْۢبَذَنَّ فِی الْحُطَمَةِ ﴿۴﴾ؗۖ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا

कि उस का माल उसे दुन्या में हमेशा रखेगा[3] हरगिज़ नहीं ज़रूर वोह रौंदने वाली में फेंका जाएगा[4] और तू ने क्या जाना क्या

الْحُطَمَةُ ؕ﴿۵﴾ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ﴿۶﴾ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ؕ﴿۷﴾ اِنَّهَا

रौंदने वाली **अल्लाह** की आग कि भड़क रही है[5] वोह जो दिलों पर चढ़ जाएगी[6] बेशक वोह

ع ۲۹

عَلَیْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ﴿۸﴾ فِیْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿۹﴾ ع

उन पर बन्द कर दी जाएगी[7] लम्बे लम्बे सुतूनों में[8]

में सब से पिछली इ़बादत है और सब से लज़ीज़ व राजेह़ तफ़्सीर वोही है जो ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इख़्तियार फ़रमाई कि ज़माने से "मख़्सूस ज़माना" सय्यिदे आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का मुराद है जो बड़ी ख़ैरो बरकत का ज़माना और तमाम ज़मानों में सब से ज़ियादा फ़ज़ीलतो शरफ़ वाला है। **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर के ज़मानए मुबारक की क़सम याद फ़रमाई जैसा कि "لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ" में हुज़ूर के मस्कन व मकान की क़सम याद फ़रमाई है और जैसा कि "لَعَمْرُكَ" में आप की उ़म्र शरीफ़ की क़सम याद फ़रमाई और इस में शाने महबूबिय्यत का इज़्हार है। **3 :** कि उस की उ़म्र जो उस का रासुल माल है और अस्ल पूंजी है वोह हर दम घट रही है। **4 :** या'नी ईमान व अमले सालेह़ की। **5 :** उन तक्लीफ़ों और मशक़्क़तों पर जो दीन की राह में पेश आईं, येह लोग ब फ़ज़्ले इलाही टोटे में नहीं हैं क्यूं कि उन की जितनी उ़म्र गुज़री नेकी और त़ाअ़त में गुज़री तो वोह नफ़्अ़ पाने वाले हैं। **1 :** "सूरए हुमज़ह" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, नव आयतें, तीस कलिमे, एक सो तीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** येह आयतें उन कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुईं जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब पर ज़बाने त़ा'न खोलते थे और इन ह़ज़रात की ग़ीबत करते थे मिस्ल अख़्नस बिन शुरैक़ व उमय्या बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा वग़ैरहुम के और हुक्म हर ग़ीबत करने वाले के लिये आ़म है। **3 :** मरने न देगा जो वोह माल की मह़ब्बत में मस्त है और अ़मले सालेह़ की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करता। **4 :** या'नी जहन्नम के उस दरके (त़ब्क़े) में जहां आग हड्डियां पस्लियां तोड़ डालेगी। **5 :** और कभी सर्द नहीं होती। ह़दीस शरीफ़ में है : जहन्नम की आग हज़ार बरस धोंकी गई यहां तक कि सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार बरस धोंकी गई ता आं कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार बरस धोंकी गई ह़त्ता कि सियाह हो गई तो वोह सियाह है अंधेरी। (ترمذی) **6 :** या'नी ज़ाहिर जिस्म को भी जलाएगी और जिस्म के अन्दर भी पहुंचेगी और दिलों को भी जलाएगी। दिल ऐसी चीज़ हैं जिन को ज़रा सी भी गरमी की ताब नहीं, तो जब आतशे जहन्नम का उन पर इस्तीला (ग़लबा) होगा और मौत आएगी नहीं तो क्या ह़ाल होगा ! "दिलों को जलाना" इस लिये है कि वोह मक़ाम हैं कुफ़्र और अ़क़ाइदे बात़िला व निय्याते फ़ासिदा के। **7 :** या'नी आग में डाल कर दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे **8 :** या'नी दरवाज़ों की बन्दिश आतिशीं लोहे के सुतूनों से मज़बूत़ कर दी जाएगी कि कभी दरवाज़ा न खुले। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि



www.dawateislami.net